(Hindi discourse given by Dr. Yogindrasinh Joshi (Yogi Dada) on 23rd November 2006 on VARDHAMAN VRATADHIRAJ at New English High School, Bandra)

॥ हरि ॐ ॥

आज यहाँ मैं कुछ भी नही कहूँगा, मैं नही बोलनेवाला हूँ। बोलेंगे डॉ योगिंद्रसिंह जोशी। श्रीमद् पुरुषार्थ ग्रंथराज के तृतीय खंड में आनंद साधना में श्री वर्धमान व्रताधिराज के बारे में जो लिखा गया है। वह व्रत क्या है? उसे व्रताधिराज क्यों कहते हैं? उसका पालन कैसे किया जाता है? अभी तो ततीय खंड सिर्फ मराठीमें अवतरीत हुआ है। इसलिए सिर्फ यह जो वर्धमान व्रताधिराज व्रत है। उसके बारे में लिखे गए पन्ने हिंदी में और अंग्रेजी में उन पन्नों की पत्रिका संस्थाने अवेलेबल की है। आप लोग उसे पढ़कर व्रत कर सकते हैं। उसके बारे में जो भी मार्गदर्शन हमें चाहिए वह करने के लिए डॉ. योगिंद्रसिंह जोशी जो आज बात करेंगे, बातें करेंगे उन तत्वों के अनुसार बड़े प्यार से इस व्रत कों कीजिए। यह गलती हो सकती है, या वह गलती हो सकती है इन सारे चीजों को छोडकर, जिंदगी मे अगर कुछ पाना है और ऐसा पाना है कि, बस्स जीवन कृतार्थ हो जाए। प्रपंच भी सुंदर, परमार्थ भी सुंदर दोनों कभी भी एक दूसरे के खिलाफ नही होते। ऐसा नही होता है कि प्रपंच परमार्थ के आड़े आता है और परमार्थ प्रपंच के आडे आता है। कभी नही प्रपंच और परमार्थ अभुदय परमार्थ दोनों को जीवन में लानेवाला यह व्रत अब हमें देखना है क्या है? कैसा है ? कैसे किया जाता हैं?

॥ हरि ॐ ॥

श्री योगिंद्रसिंह जोशी

श्री अनिरुद्ध विजयते सदा ॥ वर्धमान व्रताधिराज। आज हम अध्ययन करनेवाले है, श्री वर्धमान व्रताधिराज का। व्रतके बारेमें बचपनसे हम सुनते आते हैं, देखते रहते हैं कि व्रत करनेवाले कैसे व्रतों को करते हैं और स्वयं भी हम कई व्रत करते हैं, व्रतों का पालन करते हैं तो व्रत का अर्थ क्या है? संक्षेप में देखेंगे। परमात्मा की दिशा में वेग के सातत्य को जो हमारी प्रगति है, वेग है, गति है, उसके सातत्यको कायम रखते हुए, परमात्मा की दिशा में जो गतिशील रहता है वही व्रत है। परमात्मा की दिशा में निरंतर गतिशील रहना यही व्रत का पहला अर्थ है।

दूसरा अर्थ है, मनके पसंद और नापसंद इस द्वंद्व से परे होकर विवेक से सिर्फ यही मेरे हैं, इसका चुनावकर साथ रहना ही व्रत है। साथ ही इनकी वानर सेना में यह मुझे चुने इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए वह आचरण भी व्रत है। तीसरा अर्थ समीरदादा ने बताया था वही कि मुझे क्या करना है? इससे महत्वपूर्ण है कि भगवान राम मुझसे क्या चाहते है? मेरी इस भूमिका को समझते हुए, मेरा आचरण निरंतर वैसा ही होते रहना, यही व्रत है। तो जीवन में वास्तवित व्रत है कि भगवान प्रभुराम मुझसे क्या चाहते हैं, मेरी भूमिका क्या है। मुझे क्या करनाहै इससे जरुरी है, कि भगवान मुझसे क्या करवाना चाहते हैं। इस भूमिका को ध्यान में रखते हुए, निरंतर वानरप्रयास करते रहना यही व्रत है। यह समीरदादा के शब्द हैं। तो व्रत है, ये देवयान पथिक जो है, उनका गुणधर्म है। देवयान पंथपर चलनेवाले जो पथिक हैं वही व्रत करते हैं, इसलिए हम देखते है कि देवों को व्रतधारी कहते हैं, जो राक्षस है, जो असूर है उन्हें व्रतभ्रष्ट कहा जाता है। व्रत न करनेवाले जो हैं वह राक्षस कहलाते है। और पवित्र व्रतका पालन करनेवाले देव कहलाते हैं। ग्रंथराज में हम लोग देखते हैं कि व्रत के बारे में जानकारी आनंद-साधना खंड में बापूजी ने दी हुई हैं। हर मानव को अपना प्रारब्ध बदलने के लिए अपनी अंतकरण की शुद्धि के लिए और सारे दोष और पापोंसे मुक्ति पाने के लिए जो सामर्थ जिस सामर्थ की जरुरत होती है, उस सामर्थ को प्रदान करनेवाला व्रत यह है। तो हम देखते है कि व्रत से हमे जो सामर्थ प्राप्त होगा उससे हम अपने प्रारब्ध पर मात कर सकते है, हम अपने सारे के सारे दोष और पापों को नष्ट कर सकते हैं वह सामर्थ हमें व्रत प्रदान करता है।

बहुत सारे व्रतों में श्री वर्धमान व्रताधिराज यह एकमात्र ऐसा व्रत है जो व्रत के इस व्याख्याकी तो परिपूर्ति करता ही है साथ में हमारा जीवन ही व्रत बन जाता है। देखिए एक व्रत करते हैं, बादमें व्रत खत्म होता है श्री वर्धमान व्रताधिराजसे, हमारा जीवन ही पूरा व्रत हो गया, मान लिजिए कितना अच्छा हो जाएगा। क्यों कि जो व्रतधारी होता है, उसपर हमेशा परमात्मा की कृपा होती है। क्योंकि व्रत का मतलब ऋग्वेदमें कहा है कि विष्णोः कर्माणि पश्चत। यतो, व्रतानीपस्पशे॥ इंद्रस्य युज्य सखा। इसका अर्थ है, विष्णु जो है, महाविष्णू वे स्वयं व्रताधारी है। उनके व्रत को देखिए वे आपके हर व्रत को आपके हर कर्म को पूरी बारीकीसे निहार ही रहे हैं। तो भगवान हमेशा मेरी तरफ देख ही रहा है। उन्हें मेरे हर छोटे से छोटे कर्म और उसके पीछे जो कारण है उस कर्म पिछे वह जानते ही हैं। भगवान तक मेरी हर बात पहुँचती है। कबीरजी कहते हैं कि भाई चींटी के पैर में घुँघरु बाँधो तो एक पैर के घुँघरु की ध्वनि भी भगवान तक पहुँचती है। तो क्या आपके हृदयकी ध्वनि नहीं पहुँचेगी । बापूतक आपके हृदय की ध्वनी हर क्षण आप जहा भी हो पहुँचती ही है। तो आप जो व्रत करेंगे वह भी हमारे परमात्मातक पहुँचता ही है।

दत्तात्रय परमात्मा हमारे अनिरुद्ध हैं, परमेश्वर दत्तगुरु इस विश्वके जो हम कहते है की मूल अव्यक्त शक्ति । जो व्यक्तावस्था में नही आती, बार-बार पूर्णावतार, बार-बार अवतरित होते हैं, यह महाविष्णु, यह परम शिव, यह परमात्मा जो सत्य, प्रेम और आनंद के लिए विश्व में मर्याा की स्थापना के लिए पूर्णावतार लिए आज प्रकट हुए है। तो हमें व्रतधारी बनना है। हमें व्रतका पालन करना है। तो जीवन मे यह व्रत सबसे इंपोर्टंट है, क्यों कि यह व्रताधीराज है। तो हम देखेंगे आगे जाकर तो सबसे पहले वेदोमें कहा है कि इंद्रके प्राणप्रिय सखा होनेवाले, इस महाविष्णु के व्रत को देखिए। अब देखिए इनके जीवन को, कि कैसे स्वयं हमेशा व्रतरत हैं। व्रत

में लगे हुए हैं। तो हमें भी व्रत साल में एक बार तो करना चाहिए। यह तो हर अवतार में व्रत ही करते हैं। हमारे उद्धार का, मर्यादा संस्थापन का, तो हमें व्रत करना ही चाहिए अगर हमारी इच्छा है कि हम इनकी दिशा में प्रगति करें तो।

अब अनेक, बहुत सारे प्रचलित व्रत हैं। जैसे वैभवलक्ष्मी व्रत है, जैसे श्रीमद्पुरुषार्थ मे उल्लेख कियाहै वे सारे व्रत किए लेकिन फिर भी उसमे आगे जाकर हमें परमात्मा के प्रेम का अनुभव मिलनेवाला ही है। तो यह सबसे पहली बात है, कि बाकी सारे व्रत भी अपनी अपनी जगह सही है। कोई गलत नही है। उन्हें हम कर भी सकते हैं। लेकिन श्री वर्धमान व्रताधिराज जो करता है, उसके बाकी सारे व्रतोंका पुण्य उसे दसगुना मिलता है। यह सबसे पहली बात है। व्रताधीराजका श्रेष्ठत्त्व है। क्यों कि यह व्रताधिराज है। यह सभी व्रतों के महाराजा है, राजाधिराज है, सभी व्रतों का मूल परमात्मा का मूल व्रत जो है यही प्रकट हुआ है श्रीवर्धमान व्रताधिराज के रुपमें। बापूजी की अकारण करुणा से यह व्रत हमें प्राप्त हुआ है।

हमारे सारे जन्मों के पापों से हमें मुक्त कराने के लिए श्री वर्धमान व्रताधिराज ही एक मात्र समर्थ व्रताधिराज है। तो यह हम देख चुके हैं। कि यह हमें दृष्ट चक्रोंसे निकाल रहे है। क्यों कि देखिए इन्सान को जो भी मिलता है, उससे वह कभी सुखी नही होता है। और चाहिए, फिर वह वैसा ही चाहिए। कोई सेटिस्फाय नही रहता है। तो हम कुछ ना कुछ करते रहते हैं। उसे जो मिलता है, फिर वह मिलने के बाद, मिलने तक उसकी चाह रहती है लेकिन मिलने के बाद लगता है, नहीं भाई ऐसा होना चाहिए, तो यह कभी खत्म न होनेवाला सिलसिला है। अनऐंडिंग प्रोसेस है। इसमें हम सुखी होने की कोशिश में कभी ऐसे काम करते रहे तो कभी सुखी तो हो नही पाएँगे। ऐसा कौनसा व्रत है, जो हमें परमसुख देता है। इससे क्या होता है,हम भगवान से निरंतर कुछ ना कुछ माँगते रहते हैं। और भगवान को नहीं माँगते। यही मिस्टेक करते हैं। भगवान को जब माँगेगे ना, तो परम सुख मिलता है, आपको परम सुख अपने आप मिलनेवाला है। क्यों कि इस बार वे आपके जीवन में, प्रवेश उनका हुआ, वे आपके जीन में क्रियाशील हो गए तो बाकी सारे प्रोब्लेम्स् अपने आप सॉल्व हो जाएँगे। क्यों कि जहाँ वे रहते हैं वहाँ प्रोब्लेम्स् रह ही नही सकता ।

यह सबसे इंपोर्टंट बात है। और व्रताधिराज हमारे जीवन को ही, जीवन का रुपान्तर ही व्रत में करता है। बाकी सारे जो तथाकथित व्रत हैं, जिनमे परमात्मा का अधिष्ठान नही है, वह व्रत हो ही नही सकता। फिर भी हम जो कहते है, भाई की यह व्रत है, फलाना व्रत है, यह व्रत हमें फल जरुर देते हैं। लेकिन वह मधुर फल नही होते हैं। इस वर्धमान व्रताधिराज से ही हमे मधुर फल की प्राप्ती होती है। और मधुर फल से ही ओज प्राप्त होता है। तो आप ही सोचिएँ कि बाकी दूसरे सारे फल कडवे खट्टे खाने से अच्छा है कि मधुर फल खाए। और मधुर फल मिलेगा सिर्फ वर्धमान व्रताधिराज से ही। तो यह बात हमने देखी और यह जो अनऐंडिंग प्रोसेस है। दौडते रहते है, दौड़ते रहते है। लेकिन कभी मंजिल हाथ में नही आती। और कभी-कभी हम पहुँच जाते है पॉईंट ऑफ नो रिटर्न।

श्री वर्धमान व्रताधिराज हमें हमेशा मर्यादा में रखनेवाला व्रत है। कभी भी हमसे मर्यादा भंग न हो, इसलिए मर्यादा का पालन हमें करना है। तो वर्धमान व्रताधिराज हमारे लिए बहुत सहज सुंदर मार्ग है। आन्हिक और श्री वर्धमान व्रताधिराज यह दो जो हैं नित्य नैमित्तिक कर्म। जो नित्य रुपसे आन्हिक करेंगे। हम लोग अगर नित्य रुपसे आन्हिक का आचरण करते हैं। आन्हिक फॉलो करते हैं। और श्री वर्धमान व्रताधिराज का पालन करते हैं तो हम हमेशा मर्यादा मे रहेंगे और हमारे जीवन मे कभी कोई प्राब्लेम आ ही नही सकता, क्यों कि यह वर्धमानता क्या हैं? यह अनऐंडीग प्रोसेस नही है। वर्धमानता क्या होती है? मान लिजिए कोई आदमी वेंटीलेटर पे सपोर्टिव्ह सिस्टम पे जी रहा है बहुत साल तक तो क्या वह दिर्घायु है? नही!

आयुर्वेद में पहला अध्याय चरक लिखते है दिर्घांजिवीत्यै। दिर्घायु मतलब निरामय ऐसी दिर्घायु। जिसमें व्रतोपवासाध्यन है जो व्रत आदि का पालन करने के लिए परमार्थ और ग्रहस्थ दोनों सुखकर करने के लिए निरामय ऐसी जो दिर्घायु है। वही दिर्घायु है। नही तो जी रहे है बस, सब बीमारियों को साथ में लेकर, यह दिर्घायु नही है , वह लंबी आयु जरुर होगी। लेकिन दिर्घायु नही होगी। तो वैसे ही, जैसे एक बच्चा है, बच्चे को सूजन आ गई है। बच्चे की दृष्ट-पुष्टता, बच्चेकी परिपुष्टी और बच्चे को आई हुई

सुजन इसमे जो फर्क है, वही बाकी सारे व्रतो में और श्री वर्धमान व्रताधिराज में फरक है। हमें सूजन की जरुरत नही है। हमें सूजन नही चाहिए। हमे परिपुष्टता चाहिए। तो वर्धमान व्रताधिराज हमे परिपुष्टता देता है। हमारे जीवन का समग्र विकास करनेवाला श्री वर्धमान व्रताधिराज है। यह हम पहले देख लेते हैं। यही मूल फरक वर्धमान व्रताधिराज में और बाकी सब क्रियाओं में है।

श्री वर्धमान नाम में ही सब कुछ है। श्री -वर्धमान, वर्धमान का मतलब है सतत, निरंतर रुपसे समग्रत्वसे, समग्र रुपसे विकसित होनेवाला। निरंतर समग्र रुपसे जो विकसित होनेवाला है, उसे वर्धमान कहते हैं। और व्रताधिराज कहते हैं, सभी व्रतों का मूल आधार, सभी व्रतोंके राजाधिराज जो हैं वह व्रताधिराज हैं। इनकी तुलना किसी व्रतसे हो ही नही सकती। यह सर्वश्रेष्ठ है और सबसे आगे जाकर हम लोग देखेंगे, अध्ययन करेंगे कि यह सबसे सहज सुंदर और सरल है। इससे सहज, सुंदर और सरल व्रत इस दुनिया में न हुआ है, न है, न आगे कभी होगा। यह सबसे सहज, सुंदर वेरी इजी टू फोलो कोई भी व्यक्ति इसे कर सकता है बड़ी आसानीसे। सबसे आसान और फिर भी सर्वश्रेष्ठ । सबसे मूल्यवान चीज जैसे है जो हवा वह सर्वश्रेष्ठ है और सबसे आसान भी है लेना उसे वैसेही व्रताधिराज हैं। सबसे इजी और सहज सुंदर और फिर भी उसी वक्त सर्वोच्च, अतुलनीय ऐसे व्रताधिराज हैं। बाकी सारे व्रतो में उलझनेसे अच्छा है, हम श्री वर्धमान व्रताधिराज को करें। बाकी परमात्मा के अधिष्ठान जिसमे है, उस व्रत को हम फॉलो जरुर करेंगे। उसका हमे दसगुना लाभ भी मिलेगा। लेकिन श्री वर्धमान व्रताधिराज न किया और बाकी सबकुछ भी किया तो भी राम भिमुख संपत्ती प्रभुताई। जाई रही पाई बिनुपाई॥ आपने बाकी सबकुछ करके सबकुछ पा भी लिया वह भी तुलसीदासजी कहते है भाई, रामभिमुखता अगर है, तो वह जो सारी संपत्ति आपने जो इक्कठा की है उसका क्या फायदा, उसका क्या लाभ? अंत में कुछ काम नही आनेवाला है। गांधारी के सौ बेटे थे। लास्ट में उसके कौन काम आया? जिसको शाप दिया उसी श्रीकृष्ण ने उसका उद्धार किया। सौ बेटे थे, मेरा बेटा मुझे देखेगा, मेरा यह मुझे देखेगा, मेरा वह मुझे देखेगा, कोई देखनेवाला नही है। लास्ट में बापू ही देखनेवाले हैं। साथी अखेरचा तुच। लास्ट में बस समय आता है तो कोई किसी के लिए रुकता नही है, लास्ट में वही हमारे लिए है। और वही हमारे देखनेवाले भी है। हमारा परिपालन करनेवाले है। और इसलिए हमें हमेशा सोचते रहना चाहिए कि भाई आखिर में हमें क्या प्राप्त करना है।

उनके चरण और उनके चरण हमें मिल सकते हैं श्री वर्धमान व्रताधिराज से क्यों कि यह व्रताधिराज कैसा है? श्री वर्धमान व्रताधिराज कैसे है? पूर्णमद, पूर्णमिदम, पूर्णात, पूर्ण मुद्च्यते। पूर्णस्य पूर्ण मादाय, पूर्ण मेवाव शिष्यते॥ पूर्ण से पूर्णा का उद्भव हुआ और जो उद्भवित हुआ पूर्ण है। उसे अपना पूर्णत्व देकर भी पूर्णत्व जो मूल मे था वैसे का वैसा तब भी बना हुआ है। मेरे सद्गुरु अनिरुद्धजी भी पूर्ण हैं और उनके हाथोंसे प्रकट हुआ, उनके हृदय से प्रकट हुआ यह व्रताधिराज भी पूर्ण है और श्री वर्धमान व्रताधिराज को अपना पूर्णत्व देकर भी बापू वैसे भी पूर्ण है। और वे यह सब क्यों कर रहे है? हमे पूर्णत्व प्रदान करने के लिए, हमारा विकास करने के लिए। बापू के हृदय में हमारे लिए हरएक के लिए जो प्यार है जिसे बयान नहीं कर सकते हैं। कि बापू का प्यार क्या है हमारे लिए, बापूके हृदयमें क्या करुणा है हमारे लिए और वेही प्रकट हुए हैं श्री वर्धमान व्रताधिराज में , यह साक्षात बापू की करुणा का ही प्रकटन है बापू की क्षमा का ही प्रकटन है। हमारे सारे पापोंको धो डालने के लिए श्री वर्धमान व्रताधिराज को बापूजीने प्रकट किया है, हमारे हाथ में सौंपा है जैसे माँ अपने बच्चों को उसके लिए जो सबसे हितकर है वही देती है। वैसे ही बापू ने भी हमे दिया है। दुनियाके सभी डॉक्टर्स सोचते हैं, हमलोग भी कॉलेज में चर्चा करते थे, कि भाई ऐसी कोई चीज अगर, क्यों कि हमलोग देखते हैं कि भाई पेशंट को डायबिटीस भी है ब्लड प्रेशर भी है हार्ट की प्रॉम्बलम भी है और भी टेंशन है, सब है तो अभी जैसे मिसेंजर डी एन ए के उपर आर एन ई के ऊपर खोज कर रहे हैं कि भाई उसके द्वारा हम तरेंगे ऐसी कोई गोली मिलेगी कि एक गोली खाओ तो सभी बीमारीओंकी एक ही गोली और एक ही बार खाने की तो सभी बीमारीयाँ ठीक हो जाएँगी, ऐसा प्रेक्टिकली पॉसिबल नही लगता है, भौतिक जीवन की दृष्टीसे लेकिन अध्यात्म में बापू ने जो यह श्री वर्धमान व्रताधिराज दिया है, यह ऐसी गोली है, जो एक बार खाएँ उसका बेड़ापार हो जाएँ। सब कुछ सभी पिडाएँ, सभी कष्ट, सभी व्यथाएँ, सब दूर हो जाएँगी।

केवल इस वर्धमान व्रताधिराज से और किसी चीजकी जीवन में जरुरत ही नही पड़ेगी क्यों कि यह परमात्मासे कुछ माँगने की चीज नही है, परमामा से परमात्मा को ही माँगना यही श्री वर्धमान व्रताधिराज का मूल उद्देश्य है। बस, हमारे लिए जरुरी,

जीवन के लिए, गृहस्थ जीवन के लिए, संसार के लिए जो भी बातें जरुरी हैं हमें वह सभी बातें हमें अपने आप मिलनेवाली हैं, यह सबसे महत्वपूर्ण बात है लेकिन जो हमे चाहिए कि वे हमारे जीवन में आए वह हमारे लिए सबसे जरुरी है और जीन लोगोंने इस व्रतको हमारे लिए बरकरार रखा हम देखेंगें इतिहास पहले, कथा देखेंगे कि इस व्रतका अवतरण कैसे हुआ? तो पाध्ये कुलमें, जिन्होंने परमात्मासे सिर्फ परमात्माको ही माँगा कुल अपने हैं विठ्ठल आवत।

परमात्मा ही परमात्मा के अलावा कुछ नही चाहिए। ऐसा भाव जिनका था ऐसे पाध्ये कुल में हम सब जानते हैं उस कुलकी गरीमा को। साक्षात भगवान का प्रगटन हुआ, ऐसा महान कुल, ऐसी भक्ति, ऐसी मर्यादा का पालन और कही नही है विश्वमें, ऐसा महान और श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ कुल। उस पाध्ये कुल में १९२४ की बात है १९२४ की कार्तिकी एकादशी, कार्तिक शुद्ध एकादशी को श्री गोपिनाथजी शास्त्री पाध्ये। श्री विद्यामकरंजी हम जिन्हें कहते हैं। हमारे बापूजी के मानवी सद्गुरु जो हैं वे निंब गाँवमें गए थे। जहाँ सद्गुरु पुण्यक्षेत्र हम देखते हैं वहाँ पर है वहाँ पर निंब गाँवमें श्री गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजी कार्तिकी एकादशी को गए थे। कुछ गिनेचुने लोग उनके साथ गए थे और वहाँ पर तुकारामजी का एक अभंग जो था, बुडती हे जन, पहावे ना डोळा। येतो कळवळा म्हणूनी त्यांचा।। इसका मतलब है कि भाई, इस भवसागर में डूबते हुए लोगोंको देखकर मेरे हृदय में बड़ी करुणा उत्पन्न हो रही है, मुझसे देखा नही जा रहा है इनका दर्द। ये जो पक्तियाँ हैं ये गोपिनाथ शास्त्री पाध्ये के हृदय को छू गई।

उन्होंने देखा कि आगे आनेवाला जो कलियुग है, उसके चरमसीमा की कालावधी जो है, कालखंड जो है उसमें इतने सारे उत्पात, इतनी सारी उथलपथल होनेवाली है कि इस विश्वमें सामान्य व्यक्तिका जीना मुश्किल हो जाएँगा, तो हम जैसे गृहस्थाश्रमी लोग, जो भक्ति भी टेढीमेढी करते रहते है उसमे सौ बार गिरते हैं, गलतियाँ करते हैं लेकिन मनमें अच्छा करने की चाहत जरुर होती है। तो गृहस्थाश्रमी करनेवाले हम जैसे लोगों के लिए, सामान्य मानव के लिए जो पहले ही गृहस्थी के बोझ से दबे हुए हैं, और भक्ति भी करना चाहते हैं, भगवान की भक्ति भी करना चाहते हैं। उनके लिए कोई ईजी रास्ता है की नही? कि जिससे हमें परम सुख की प्राप्ति हो। हमारी गृहथी भी अच्छी हो, हमारा परमार्थ भी अच्छा हो यह उनके हृदय में करुणा के तरंग उप्तन्न हुए। भावतरंग और वहाँ, पांजरा नदी है, नींब गाँव के पास। श्री गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजी ने भगावन विठ्ठल को, विठ्ठल के चरणों में अर्जी प्रस्तुत की भगवान मुझे आप ही बताएँ, इससे निकलने का क्या रास्ता है? सहज, सुंदर ऐसा कोई रास्ता हो जो हम जैसे सामान्य सभी इन्सानों के लिए, जिस पर चलना बहुत आसान हो। ऐसे रास्ते को आप ही मुझे बताइए। और खाना-पिना छोड दिया। देखिए कितनी करुणा है, उन्हें स्वयं के ऊपर तो कोई संकट नही था,उनकी स्वयं की कोई प्रॉब्लम भी नही थी, कोई अड़चण नही थी।

केवल सामान्य मानवों के लिए वह भी आनेवाले कालखंउ में, कालावधी में कलियुग की चरमसीमा में जो प्रॉब्लम क्रिएट होनेवाले हैं, उसमें से सामान्य मनुष्य जो है वह कैसे तरे? उससे कैसे उभरे? उसका जीवन कैसे सफल हो? इस हेतु से गोपिनाथजी ने भगवान विठ्ठल को ही, वहाँ धरना देकर बैठ गए। भगवान आप मुझे बताइएँ, नौ दिन तक बिना कुछ खाए-पीए। श्री गोपिनाथ शास्त्रीजी वैसे ही बैठे थे। हे भगवान, हे दिनबंधु, हे दिनदयाल आप प्रगट हो जाइए और मुझे बताइएँ कुछ तो उपाय बताइए। हे भगवान, के कलियुग में हम मानव किस रास्ते से, आसानीसे जा सकते हैं। आप ही बताइए ऐसे सेतु को, जिसपर से हम आसानीसे, चलकर, इस भवसागर को पार कर सकते हैं। सबके साथ आनंद से नाचते गाते हुए। जैसे वानर-सेनाने पार किया था। गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजी के नौ दिनतक बीना खाए-पीए इसी भावावस्था में वह भगवान विठ्ठल की प्रार्थना कर रहे थे। नौवें दिन भगवान विठ्ठल प्रकट हुए और उन्होंने गोपिनाथजी से कहा, कि श्री वर्धमान व्रताधिराज यही वह रास्ता है, यही वह सहज, सुंदर, सरल रास्ता है, जो कलियुग में हर एक व्यक्तिको सुखकी गृहस्थी के साथ, आनंद की, परमार्थकी प्राप्ति जिसे हो सकती है उस श्री वर्धमान व्रताधिराज के बारेमें भगवान विठ्ठलने स्वयं श्री गोपिनाथजी से कहा और विश्व कल्याण का हरएक मानव के कल्याण का वर्धमान व्रताधिराज का यह जो रास्ता है, वह पूरे मानव वंश को सुलभ हो इस हेतुसे सहस्त्र पूर्णिमाओं तक। सहस्त्र पूर्णिमा याने हजार पूर्णिमातक १९२४ से हजार पूर्णिमा तक, इस व्रतको आपके वंशमें आप चालू रखिएँ। आप आपके वंश में इसे करना शुरु रखिए फॉलो कीजिए। आपके वंश में

अगर इसे सहस्त्र पूर्णिमाओंतक आप शुरु रखेंगे ,तो इसका जो एक अंग है जाप-तप वह सिद्ध हो जाएँगा और इसके बाद आनेवाले युग की चरम सीमा में यह व्रत सारे मानव वंश के लिए कल्याण का मार्ग होगा।

गोपिनाथशास्त्रीजी की देखिए क्या तपस्या है, और क्या करुणा है इनके हृदय में। विठ्ठल जी के दृष्टांतके अनुसार श्री विद्यामकरंदजी ने याने गोपिनाथ जी शास्त्री पाध्येजीने उसी साल, उसी वर्ष १९२४ की मार्गशीर्ष पूर्णिमा की जो दत्तजयंती थी, उसी मार्गशीर्ष पूर्णिमा से उन्होंने उस व्रत का श्री वर्धमान व्रताधिराज का जो एक अंग था, एकमेव अंग जिसे सहस्त्र पूर्णिमाओंतक याने हजारों पूर्णिमा तक सिद्ध करना था, जाप करके उस अंग को वर्धमान जाप की शुरुआत की। तो मार्गशीर्ष पूर्णिमा १९२४ से श्री गोपिनाथजी पाध्ये ने स्वयं श्री वर्धमान जापकी शुरुआत की। उसके पश्चात श्री गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजी ने अपनी कन्या को यह व्रत का जाप करने के लिए कहा और शकुंतलाबाई पंडित जो बापूजी की नानी है, उन्होंने इस व्रत को गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजीके पश्चात जारी रखा। इस वर्धमान जाप को वैसे ही करना शुरु रखा। उसके बाद बापूजी की माताजी अरुंधती माताने अपनी माँ के साथ याने बापूजी की नानी के साथ वर्धमान जापको १९५५ की मार्गशीर्ष पूर्णिमा से १९५६ की मार्गशीर्ष पूर्णिमा तक वर्धमान जाप को किया देखिए १९२४ से गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजी ने शुरु किया था, बादमें बापूजी की नानीजी ने शुरु रखा उस व्रत को। वर्धमान जाप में नियम क्या था?

एक ही नियम कोई भी स्तोत्र, एक जो व्रतपुष्प था उनका, उस व्रतपुष्पको पूर्णिमा से लेकर अगली पूर्णिमा तक एक एक की संख्यामे बढ़ाते जाना। याने आज की पूर्णिमा में एक से शुरु करेंगे, कल दो, परसो तीन, जैसे जैसे एक-एक दिन बढ़ते जाएँगा, वैसे वैसे एक एक से इस जाप को बढ़ाते जाना। मान लिजिए, एक स्तोत्र है, तो उस स्तोत्र को एक, दूसरे दिन दो बार, तीसरे दिन तीन बार इस तरह से वर्धमान जाप को करते जाना और फिर अगली पूर्णिमा से फिर शुरु करना है। हम साल में एक बार करेंगे लेकिन पाध्ये कुलमें हर पूर्णिमा से पूर्णिमातक इस व्रतको फॉर ८१ इयर्स, देखिए कोई छोटी कालावधी नही हैं। ८१ इयर्स तक इन्होंने जारी रखा इसव्रत को और इसमें १९५५ की मार्गशीर्ष पूर्णिमा से १९५६ की मार्गशीर्ष पूर्णिमा तक बापूजी की माताजी ने इस पूर्णिमा को किया और १९५५ की कार्तिकी पूर्णिमा को हम सब जानते हैं, कि अनिरुद्धजी का अवतरण हुआ है। तो गोपिनाथी शास्त्री पाध्येजी, लिलाताई ये सब जो हैं, सुशीलाताई, द्वारकामाई ये सब जानते थे। कब, क्या होनेवाला हैं। इसलिए उन्होंने, बापूकी नानीजी ने बापू की माताजी से यह व्रत १९५५ की मार्गशीर्ष पूर्णिमा से १९५६ की मार्गशीर्ष पूर्णिमातक करवाया।

१९२४ को व्रत शुरु हुआ १९५६ बराबर ३२ साल होते हैं और भागवत में, एकनाथी भागवत में कहा गया है कि ३२ अध्याय हैं और ३२ वे अध्याय में स्वयं भगवतं है, स्वयं भगवान ही हैं वहीं बताते हैं कि ३२ वा अध्याय, वे खुद ही हैं तो देखिए बराबर ३२ साल के बाद ही अनिरुद्धजी का प्रकटन हुआ, तो इसमं जरुर कोई रहस्य छिपा है जिसे गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजी जानते थे। इसे आगे फिर १९९१ में बापू की नानीजी ने जारी रखा था जिसे १९९१ उन्होंने नंदामाताजी को दिया। वर्धमान जाप जो है, यह वर्धमान जाप बापूकी नानीजी ने नंदामाताजी को १९९१ में दिया। और १९९३ में बापूकी नानीजी ने अपने निर्वाण के तीन दिन पहले इस जापको श्री सुचितदादाजी को दिया। तो हम सब जान जाए की इस व्रतको देखिए, किस किसने किया है इस व्रत का कितना महत्त्व है यह व्रत और गोपिनाथ शास्त्री पाध्येजी से जिस तरह १९२४ की मागशीर्ष पूर्णिमा को शुरु हुआ यह वर्धमान जाप २००५ की मागशीर्ष पूर्णिमा को सहस्त्र पूर्णिमाएँ जब पूरी हो गई तब इस वर्धमान जापका अंग पूरा सिद्ध हो गया। तो इस तरह से हमने देखा कि पाध्ये कुलमें हर पूर्णिमा से अगली पूर्णिमा तक इस व्रत को किया गया और सही में ऐसे महाव्रत को वही कर सकते हैं, ऐसी भक्ति भी चाहिए। तो हम साल में कमसे कम एक महीना, एक बार तो इसे कर सकते हैं।

हमारे लिए, इनके कारण हमें यह व्रत प्राप्त हुआ, तो ऐसी तपश्चर्या, ऐसे ऋषियोंके इस व्रत के पिछे देखिए, कितना बल होगा। तब हम जब यह व्रत करेंगे तो उनके (पॉझिटीव्ह) सकारात्मक स्पंदन हमें मिलेंगे। यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। अब श्री

वर्धमान व्रताधिराज क्या है? इस बात को पहले हम देखते हैं श्री वर्धमान व्रताधिराज जो हैं यह मानव जन्मों को प्राप्त करने के पश्चात, मानव जन्म की प्राप्ति होनेपर, मानव जन्म को व्यर्थ न गँवाने का सबसे महत्त्वपूर्ण अभिवचन है हमारे लिए वर्धमान व्रताधिराज।

इसके नौ अंग हैं। सबसे पहला अंग है। व्रतकाल एवं पाठ। व्रतकाल एवं पाठ। मागशीर्ष महिने की पूर्णिमा को इस व्रत का आरंभ करना है। मागशीर्ष महिने की पूर्णिमा। तो इस साल ४ दिसंबर को हम इस व्रतका आरंभ कर सकते है। तो मार्गशीर्ष महिने की पूर्णिमा जो दत्तजयंती है, तब से इस व्रतका आरंभ करना है। मार्गशीर्ष पूर्णिमा से कुल ३० दिनोंतक इस व्रत की अवधि है। तो मार्गशीर्ष पूर्णिमा का पहला दिन। वहाँ से लेकर शुरु होकर आगे के तीस दिनोंतक इस व्रत को करना है और तीसवे दिन इस व्रत का उध्यापन करना है। फिर चाहे उस दिन कोई भी तिथि हो। अब इन ३० दिनोंतक करना क्या है। व्रत करना याने क्या करना है। पाठ क्या करना है इसमें । व्रत काल तो हमने देख लिया अब पाठ को देखते हैं। श्रीमद पुरुषार्थ ग्रंथराज जो हैं। ये तीनों खंड, सत्यप्रवेश जो मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती चार भाषाओं में प्रकाशित हो चूका है। प्रेम प्रवास और आनंद सागर। प्रेम प्रवास हमारा मराठी और अंग्रेजी मे उपलब्ध है। आनंद साधना जो अभी-अभी फिलहाल प्रकाशित हुआ है वह मराठी में उपलब्ध है। इन तीनों खंडोसे किसी भी एक स्तोत्र को, किसी भी प्रार्थना को, किसी भी प्रमाण को या किसी भी एक पन्ने को, ग्रंथराज के किसी भी एक स्तोत्र को, या किसी भी एक प्रार्थना को या किसी भी एक पन्ने को। इनमें से कुछ भी एक। प्रार्थना हो या प्रमाण हो। जो भी हमें अच्छा लगता है, उस पन्ने को अपनी इच्छा नुसार चुन लो। उसे व्रतपुष्प कहा जाता है। जिसका हम चुनाव करेंगे उसे व्रतपुष्प कहा जाएँगा। एक स्तोत्र चुन लेंगे, एक पन्ना चुन लेंगे तो वह व्रतपुष्प कहलाया जाएँगा। मार्गशीर्ष पूर्णिमा को उस व्रतपुष्प के पठण का प्रारंभ करेंगे। मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन व्रतपुष्प का एक बार पाठ करेंगे। दूसरे दिन दो बार,तीसरे दिन तीन बार, चौथे दिन चार बार, इस तरह से बढ़ाते-बढ़ाते तीसवे दिन हम तीस बार उस व्रतपुष्प का पाठ करते-करते, बढ़ाते-बढ़ाते इसी बढ़ाने की प्रक्रिया को वर्धमान कहते हैं इसलिए इस व्रत का नाम श्री वर्धमान व्रताधिराज है। बढ़ते जाना तो हमारे जीवन में भी हर चीज जो है, बढ़ती जाएँगी। इस व्रत के जैसे-जैसे व्रत की हम व्रतपुष्प भगवान को अर्पण करते जाते हैं, बढ़ाते जाते हैं हर दिन, उसी तरह हमारे जीवन मे भी हर चीज वर्धमान होगी।

वर्धमान याने हमने देखा वैसे ही बच्चों को जैसे हमारी परिपुष्टता, यानी हमारे शरीर को सूजन न आई हो। उसी तरह यह वर्धमान व्रत हमें वर्धमानत्व प्रदान करता है। समग्र विकास प्रदान करता है। तो एक एक दिन एक-एक पाठ, एक-एक व्रत पुष्प का पाठ अधिक करते रहेंगे। तीसवे दिन तीस बार पाठ करेंगे। व्रतपुष्प का पाठ किसी भी समय कर सकते हैं। लेकिन संभवतः बिना किसी रुकावट के पाठ अगर करते हैं तो अच्छा है। मान लीजिए जीतनी बार भी मुझे पाठ करना है, उतना अगर हम बीना किसी रुकावट से करते हैं तो ज्यादा अच्छा है। लेकिन फिर भी किसी अत्यावश्यक, कारणवश, हमे अगर बीचमें उठना पड़े तो फिर पाठ शुरु करने से पहले जय हरि हरेश्वर। जय महा माहेश्वर॥ यह कहकर पाठ को आगे जारि रखिए। तो हमने देख लिया कि जहाँ तक हो सके बीना रुकावट के अखंड पाठ करना। और अगर बीच में किसी कारणवश उठाना ही पड़ा कुछ महत्त्वपूर्ण काम या कारण है, तो उस समय हम इस मंत्र को जय हरि हरेश्वर। जय महामाहेश्वर कहकर आगे का पाठ जितना बाकी है उतना पूरा कर सकते है । परमात्मा की मूर्ति अथवा प्रतिमा के सामने बैठकर ही पाठ कीजिए। तो इससें हमने देखा। परमात्मा की मूर्ति के सामने या प्रतिमा के सामने बैठकर ही हमें पाठ करना है। जिन व्यक्तियोंको जमिनपर बैठना संभव नही वे कुर्सी या अन्य किसी आसनपर बैठ सकते हैं लेकिन संभवतः जमीनपर बैठकरजो पाठ करेंगे वह ज्यादा अच्छा है। जमीनपर या कुर्सीपर बैठकर पाठ करेंगे तो उसके ऊपरकंबल चटाई या पितांबर, रेशमी वस्त्र, साधा सूतीवस्त्र रखेंगे आसन के रुपमें तो भी कोई प्रॉब्लम नही। अगर मान लीजिए जमीनपर नही बैठ सकते तो कुर्सीपर बैठ रहे है तो वहाँ पर कंबल है, रेशमी वस्त्र है, चटाई है, सूती कपड़ा है, किसी को भी आसन के तौरपर रखकर बैठ सकते हैं। लेकिन पाठ केवल जमीनपर अगर बैठकर करे तो ज्यादा उत्तम है।

व्रत कालमें पाठ करते समय हर एक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार परमात्मा के स्वरुप की किसी भी प्रतिमा को आराध्य के रुपमें अपने सामने रख सकता है। प्रतिमा को सामने पेठेपर या, पीढेपर हम रखें और पाठ पूरा होनेके पश्चात उसके मूल स्थानपर रखे। जैसे हमें पाठ करना है तो उस समय हमें उस प्रतिमा को या मूर्ति को पेठेपर या पीढेलेपर रखना है और पाठ होने के

पश्चात पूर्ववत अपने स्थानपर उन्हे विराजमान कराना। लेकिन ऐसी प्रतिमा घरमें पूजास्थान या दीवारपर हो तो उस प्रतिमा को नीचे उतारने की कोई आवश्यकता नही। उसके सामने बैठकर हम पाठ कर सकते हैं। प्रतिमा या मूर्ति को सुंदर माला अर्पण करें, उसे पुष्प भी अर्पण करें, प्रतिमा के आगे दीप प्रज्वलित करें, सुंगधित अगरबत्ती भी प्रज्वलित करें तो अधिक सुंदर हैं। व्रतकाल में कई व्यक्ति समुह में एक साथ सम्मिलीत रुपसे एक ही समयपर अपने घर या किसी अन्य व्यक्तिके घर भी पाठ कर सकते हैं। लेकिन सम्मिलीत रुप में पाठ करनेवाले सभी व्यक्तिओंका संकल्पित व्रतपुष्प जो है वह एक समान ही होना चाहिए, हर एक का अलग अलग होगा तो सामूहिक पाठ का कोई मतलब ही नही। और इन सभी व्यक्तियोंको तीस दिन एक साथ ही पाठ करना चाहिए यह भी जरुरी नही है। हर बार पाठ की शुरुआत करने से पहले और पाठके अंत में कम से कम एक बार श्री अनिरुद्ध गायत्री मंत्र का उच्चारण करना है। उस दिन का पाठ समाप्त होने के पश्चात साष्टांग दंडवत या लोटांगण करना ज्यादा अच्छा होगा। व्रतकाल में स्त्रियोंका मासिक धर्म या अन्य किसी भी प्रकार का अशौच इस व्रत में बाधा नही डालता है। व्रतकाल में अगर बाहर गाँव जाना पड़े तो परमात्माकी छोटी प्रतिमा को अपने साथ ले जाकर किसी भी स्थानपर उस प्रतिमा की आराधना करने में कोई हर्ज नही।

व्रताधिराज के नौ अंगोमें से प्रथम अंग व्रतकाल एवं पाठ और अंतिम अंग उध्यापनम् उनका पालन करना अनिवार्य है। सभीके सभी नौ अंगोंका पालन किया जाए तो अत्यंत श्रेयस्कर ही है लेकिन यदि ऐसा संभव नही तो ऊपर उल्लेखित दो अंग जो व्रतकाल का पाठ और उध्यापनम् यह अनिवार्य है, बहुत जरुरी है। और बाकी जो सात अंग हैं, उनमे सेकिसी भी तीन अंगोका पालन करें तो भी कोई आपत्ति नहीं हैं ।

दूसरा अंग है व्रताधिराज का व्यर्ज्य प्रकरण। इस व्रतकाल में सुबह का नाश्ता और दोपहर के भोजन में मांसाहार वर्जित है। रात्री के भोजन में आप मांसाहार का सेवन कर सकते हैं। इस संपूर्ण व्रत काल में कडधान का सेवक बिलकुल मत की जिए। तुवर, चना, मोट, हरे काले या सफेद मटर, राजमा, चवलाई, मसूर, सेम किसी भी प्रकार के कडधान का सेवन नही करना चाहिए। उड़द का सेवन जरुर कीजिए और मूग का उपयोग करने में कोई हर्ज नहीं।

तीसरा अंग है तील स्नानम् इस कालमें स्नान के पूर्व हलके हाथसे शरीरपर तिलका तेल लगाइए और उसके पश्चात संभवत: गुनगुने या गरम पानीसे स्नान किजिए। स्नान करने के पूर्व कमसे कम दोनों हाथों की कोनोंसे नीचे और दोनो पैरोंके घुटने के नीचे तील के तेल को जरूर लगाइए। सिर पर तील के तेलको लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है। तील के तेल का मर्दन इसलिए करना है कि भौतिक, प्राणमय और मनोमय इन तीनों देहों को तील स्नान के कारण शुभ स्पंदनों को स्विकार करना सहज हो जाता है।

इसलिए त्रिपुरारी त्रिविक्रम मंगलम यह चौथा अंग है। व्रत के पहले दिन हार के दरवाजे पर कम से कम बारह त्रिपुरारी त्रिविक्रम चिन्हों का तोरण लगाइए। यह दरवाजे के बाहर न लगाते हुए दरवाजे के अंदर की तरफ लगाए तो भी कोई आपत्ती नहीं। या safety door और main door के बीच में जो gap होती है वहाँ पर भी लगाए तो भी कोई आपत्ति नहीं है। यह त्रिपुरारी त्रिविक्रम मंगलम जो तोरण है, संस्था की ओरसे अगले गुरुवार को यहाँ उपलब्ध किए जाएँगे।

त्रिदोष धूपशीखा यह पाँचवा अंग है। व्रत कालमें हर एक व्रत धारक हर दिन सुबह स्नान के पश्चात इस त्रिदोष धूपशीखा को जलाना है। सुबह स्नान करके हमें धूपशीखा जलानी तो है ही। लेकिन पाठ का समय अगर भिन्न है, तो मान लिजिए दोपहर को पाठ करनेवाले हैं, कुछ देर बाद पाठ करनेवाले है तो उस पठण के समय धूपशीखा को जलाना चाहिए। याने स्नाना के बादद जलाना ही है और साथ में पाठ का समय अगर भिन्न है तो धूपशीखा को जलाना ही है। यह धूपशीखा त्रिविधदोष का नाश करती है। कायिक, वाचिक और मानसिक इसलिए इसे त्रिदोष शीखा कहा जाता है। इस धूपशीखा के प्रभाव से व्रत के सुफल संपूर्ण होने में सहायता मिलती है।

व्रताधिराज का छठा अंग है, त्रिपुरारी त्रिविक्रम भोग। व्रतकाल में हर एक व्रतधारक को हररोज सुबह दही शक्कर और शाम को दुध शक्कर का नैवेद्य परमात्मा को अर्पण करना है। और उस दिन का नैवेद्य उसी दिन प्रसाद के रूपमें स्वयं भी ग्रहण करना है और दूसरों को भी देना है।

सातवा अंग है इच्छा दान। व्रतकाल में व्रतधारक को स्वेच्छा पूर्वक भगवान के चरणोंमें दक्षिणा अर्पण करनी चाहिए तथा जरूरतमंददों की सहायता करनी चाहिए। इस व्रतकाल में किया हुआ दान दसगुना पुण्यका फल देता है। तो ये हम इच्छादान करें तो उचित जगह करें। हम देखकर करे कि भाई, हमारे धन का, हमारे दान का सही उपयोग, इस्तमाल हो रहा है कि नहीं। जरूरत मंदोंको ही मिल रहा है की नहीं। जैसे हम अन्नपूर्णा योजना में देखते है कि भाई, जरूरतमंद बच्चों को हम देते हैं तो हम संस्था के पास भी, संस्था की योजना में भी दक्षिणा का दान दे सकते हैं। या जहाँ भी उचित जगह है हम देखते हैं, यहाँ अच्छा कार्य है, भगवान के चरणों में हम वहाँ अर्पण कर सकते हैं।

पुरुषार्थ दर्शन यह आठवा अंग है। व्रतकाल में हरएक व्रत धारक को चाहिए और जब तक अनिरूद्ध धाम का बाँधकर निर्माण होता नहीं है, तब तक हम परमात्मा के किसी भी स्वरूप के मंदिर में जाकर, हमारे नजदीक में भाई भगवान रामजी का मंदिर है, कृष्णजी का मंदिर है, साईनाथजी का है तो अच्छे पवित्र जगह ऐसे हम जाकर दर्शन कर सकते हैं। तो व्रतकाल में तीस दिनों में नौ बार कमसे कम परमात्मा धाम के दर्शन करने हैं। जिस व्यक्ति को शारीरिक तकलीफ के कारण घरसे बाहर निकलना संभव नही उसे व्रतकाल के अंतिम दिन व्रतपुष्प के नौ अधिक पाठ करने होंगे।

और नौवा अंग है उध्यापनम्। जो बहुत important है। व्रत के तीसवे दिन व्रत पुर्ति के दिन पाठ समाप्त होने के पश्चात परमात्मा की प्रतिमा को या मूर्ति को सुगंधित पुष्पों के नौ हार अर्पण किजिए। जैसे फूल उपलब्ध होंगे, उपलब्ध पुष्पों के हार हम भगवान को अर्पण करेंगे। अलग-अलग पुष्प हो, एक समान पुष्प हो कोई आपत्ति नहीं। एक थाली लेकर नौ दिप रखने हैं, उन्हें प्रज्वलित कर, भगवान का औक्षण, आरती करनी है आरती करनी है तो आरती गा भी सकते हैं, हमें जो अच्छी लगती है उस आरती को गाते हुए भी औक्षण कर सकते है। या अगर नहीं तो पाँच बार या नौ बार औक्षण कर सकते हैं, उसके बाद श्री नवअंकुर ऐश्वर्य कृपाशिष प्रार्थना हमें करनी है।

यह नवअंकुर ऐश्वर्य परमात्मा के होते हैं, अष्टबीज ऐश्वर्य परमेश्वर के होते हैं। प्रेमप्रवास जो द्वितीय खंड है उसमें बापूजी ने इसका वर्णन किया हुआ है। दत्तगुरु के अष्टबीज ऐश्वर्य, यह आठ ऐश्वर्य दत्तगुरु के हैं, परमेश्वर के हैं। एक शुद्धता, दो श्री , तीसरा सर्व व्यापकता, चौथा वैराग्य, पाँचवा निस्वार्थ प्रेम, छठा कालातीतता, सातवा अकारण कारुण्य और आठवा सर्वज्ञता। यह दत्तगुरु के आठ बीज ऐश्वर्य है और परमात्मा के नवअंकुर ऐश्वर्य है, पहला धैर्य, पापदाहक बीज जो पुरुषार्थ पराक्रम का सामर्थ्य है। ओज दूसरा ऐश्वर्य है, तीसरा शांती, चौथा तृप्ति, पाँचवी श्रद्धा, छठी सबूरी, सातवी दया, आठवी अनुकंपा और नौवी क्षमा तो यह देखिए, सारे के सारे ऐश्वर्य हमारे जीवन में हमें हर क्षण, हर पल इनकी कितनी जरूरत है। नौ अंकुर ऐश्वर्य कृपाशिष प्रार्थना में इन सारे के सारे ऐश्वर्योंको हमारे लिए सद्गुरु प्रवाहित करते रहते हैं, नवअंकुर ऐश्वर्य में परमात्मा के और परमात्मासे ही हमें यह सब मिल सकते है & Direct मिलने का कोई रास्ता नहीं है। किसी प्रार्थना के कारण हम इस ऐश्वर्य को हमारे जीवन में प्रवाहित कर सकते है। इस प्रार्थना के पश्चात हमें नौ लोटांगण करने हैं और इसी क्रिया को श्रीवर्धमान व्रताधिराज का उध्यापनम् कहा जाता है। उध्यापन के बाद दूसरे दिन त्रिपुरारी त्रिविक्रम मंगलम् तोरण जो है, उस तोरण को सम्मानपूर्वक उतारकर हम पवित्र स्थानपर रखेंगे और व्रतकाल को छोडकर अन्य समय दरवाजे पर बारह से कम चीन्हों का तोरण हम लगा सकते हैं। ऐसा तोरण वस्त्रपर हो तो भी कोई हर्ज नहीं है। क्यों कि यह त्रिपुरारी त्रिविक्रम मंगलम् तोरण है, यह तांबे या पंचधातू पर या सोने में या चांदिमे ही आलिखित होना चाहिए। संस्था की तरफ से हमें, तांबेपर मुद्रित तोरण जो है, उपलब्ध कराया जाएगा। श्रीवर्धमान व्रताधिराज यह परमात्मा के नौ अंकुर ऐश्वर्य की प्राप्ति का

महामार्ग है। इस व्रत का आरंभ केवल मार्गशीर्ष महीने की पूर्णिमा को ही किया जाता है। और देखिए इस व्रत की सबसे बडी बात क्या है, मार्गशीर्ष महीने की पूर्णिमा को शुरु होनेवाला यह व्रत जो आधुनिक नववर्ष है उसके पहले दिन को अपने अंदर समा लेता है। जैसे चार दिसंबर को हम करेंगे तो १ जनवरी तो इसमें आ जाएँगी न तीस दिनोंमें? क्यों कि मागशीर्ष हम देखते हैं generally दिसंबर में होता है, तो इस व्रतकी सबसे विशेष बात यह है कि new year का first day इस व्रत के काल में समा जाता है। तो देखिए कि नववर्ष के पहले दिन के लिए हम भगवान के आशीर्वाद को, भगवानके शुभ स्पंदनों को प्राप्त कर रहे हैं इस व्रत के द्वारा। तो हमारे आगे आनेवाले वर्ष के लिए हमें शुभ कामनाएँ और शुभ आशीर्वाद भगवान से प्राप्त हो रहे हैं यह कितनी सुंदर बात है तो हम यह बात सबसे पहले देखे कि हम लोग मिलते हैं दूसरे को Happy New Year कहते हैं कभी शिष्टाचार के रूपमें कहते हैं कभी सामने कोई दिख गया उसे कहते हैं, तो मानव एक दूसरे को शुभ चिंतन (अभिनंदन) करता है Happy New Year कहता है तो हमें अच्छा लगता है। साल अच्छा जाएगा। शुभ कामनाएँ जितनी ज्यादा मिले उतना अच्छा है। तो यहाँ तो साक्षात भगवान हमें Happy New Year कह रहे हैं। तो कितनी अच्छी बात है।

साल के पहले दिन जो व्रत के काल में ही आ रहा है। उनके आशीर्वाद और उनके शुभ स्पंदनोंको हम ग्रहण कर रहे हैं कितनी अच्छी बात है, हमारा हर साल अच्छा जाएगा। हमारे जीवन का हर साल हर दिन अच्छा रहेगा। तो बापूजी की करूणा देखिए वही हमें Happy New Year कर रहे हैं इस व्रत के माध्यम से और क्या चाहिए जीवन में उन के आशीर्वाद से क्या possible नहीं हैं, सब possible है। ''तू आणि मी मिळून शक्य नाही असे या जगात काही ही नाही''। तो बापूजी अगर हमें आशीर्वाद देते हैं, इस व्रताधिराज के माध्यमसे सद्‌गुरु के आशीर्वाद हमें मिलते हैं, शुभ स्पंदन मिलते हैं और दत्तजयंती यह ऐसा दिन है कि जिसमें विश्वमें maximum positive vibrations प्रवाहित होते रहते हैं। और इतने प्रमाण में प्रवाहित होते रहते हैं कि आगे आनेवाले पूरे महीनेभर यह शुभ स्पंदन आसानीसे, हम लोग अच्छे पवित्र मार्ग पर पवित्र व्रत का आचरण करें, इसलिए मासानाम 'मार्गशीर्षोह'। possible श्रीकृष्ण कहते है कि सब मासों में मैं मार्गशीर्ष महीना हूँ। क्यों कि मागशीर्ष महीने में दत्तजयंतीसे ये जो बहुतही +ve ऐसे vibrations पूरे विश्वमें प्रसारित होते हैं, प्रवाहित होते है, उन्हें हम ग्रहण कर सकते हैं।

श्रीव्रताधिराज व्रत को करनेवाला व्यक्ति इन स्पंदनोंको अच्छे से हमारे लिए जितना जरूरी है उतना ले सकता है। कितनी अच्छी बात है व्रत के बहुत सारे फायदे हैं सिर्फ करना है बस, यह खुद हमें अनुभव होगा। व्रत किसी अत्यावश्यक कारणवश खंडित हो जाने पर, खंडित दिनों की दुगनी संख्या में व्रत की अवधि बढानी होगी। मान लिजिए मैं तीस दिनका व्रत कर रहा हूँ। दो दिन मेरे व्रत के खंडित हुए, मान लिजिए पंद्रह दिन के बाद एक दिन खंडित हुआ। पचीस दिन के बाद एक दिन खंडित हुआ। दो दिन खंडित हो गए या पंद्रह और सोलवह दिन खंडित हुआ, तो मुझे तीसचे दिन के बाद चार दिन बढाने होंगे, दुगनी संख्यामें दो दिन व्रत खंडित हुआ तो चार दिनका व्रत अधिक करना होगा। याने तीस दिन के बदले चौतीस दिन व्रत करना होगा। लेकिन अगर छह दिनोंसे जादा एकत्रित रूप में या अलग अलग व्रत खंडित हुआ, तो व्रत की अवधि बढाने पर भी कोई लाभ नहीं। छह दिनोंसे कम हो तो ही लाभ होगा ऐसे समयपर क्या करना है? व्रत की पूर्ति न होनेका दुख न करते हुए, व्रतको स्थगित कर दीजिए और अगले वर्ष व्रत को जरूर कीजिए। अपरिहार्य कारण वश व्रतकी पूर्ति न होनेपर कोई भी problem नही आएगा। नरक कही उपर आकाश में या पाताल में नहीं होता है तो वह जीवन में ही प्रारब्ध के कारण उत्पन्न होता है श्रीवर्धमान व्रताधिराज के पालन से मनुष्य को जीवन में कभी भी नरक यातना भुगतनी नहीं पडेगी। यह ग्वाही इस व्रताधिराज की है। हमें जीवन में यातनाओंसे मुक्ति चाहिए, तो यह व्रताधिराज हमारे लिए बहुत सरल, सुंदर और सहज रास्ता है।

श्रीवर्धमान व्रताधिराज के पालन से सुक्ष्म, स्थुल और तरल इन तीनों स्थरोंपर भगवत कृपासे हर एक बात अपने आपही सुसंपन्न हो जाती है। सभी स्तरों पर हमारी प्रगति ही होती है, विकास ही होता है। व्रताधिराज की यह जो पुस्तिका है जिसमें पूरी जानकारी दी गई है, व्रत के सभी अंगोके बारेमें वह हिंदी में और मराठी में आज उपलब्ध है, अंग्रेजी में अगले गुरुवार को उपलब्ध रहेगी। व्रत तो हमारा ४ दिसंबर से शुरू होने वाला है। तो अगले गुरुवार व्रताधिराज की पुस्तिका हिंदी, अंग्रेजी, मराठी तीनों भाषाओं

में हमारे लिए उपलब्ध है। आन्हिक की जो पुस्तिका है वह मराठी में आज उपलब्ध है। जो रोज करना है, नित्य करना है और हिंदी में जो पुस्तिका आन्हिक की है वह बहुभाषिक सेंटर्स हैं हमारे वहाँ पर शनिवार को उपलब्ध होगी और आन्हिक की अंग्रेजी पुस्तिका अगले गुरुवार को यहाँ पर उपलब्ध होगी। श्रीवर्धमान व्रताधिराज के बारेमें हमने सब कुछ अच्छी तरह से जान लिया है। फिर भी इसमें कोई अगर बात लिखने में आगे -पिछे हो गई हो तो पुस्तिका में पूरा का पूरा वर्णन सविस्तार रूपसे दिया हुआ है। वहाँ से देखकर हम आसानीसे इस व्रत को कर सकते हैं। उसे पढने के बाद कोई भी confusion नहीं रहेगा और इसके पीछे सबसे बडी बात है, कि जटिल कर्मकांडों के पीछे न उलझते हुए बडे प्यारसे इस व्रतको करना है क्यों कि यह व्रत बापूजी के प्यार से उद्‌भवित हुआ है तो हमें भी उसे प्यारसे करना है यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। जो प्यारसे करेगा उसे सब मिलेगा, कुछ भी कम नहीं होगा। जीवन में सब चीजों की प्राप्ति होगी यह व्रत ऐसा है कि आगे आनेवाले समय के लिए बहुत जरूरी व्रत बापूने हमें दिया है। यह अगस्त्य शक्ति और अतुल शक्तिको धारण करनेवाला है। विश्व के विकास सूर्य को जिस राहूने ग्रसित किया है, उसे मुक्ति दिलानेवाला है। जो विंध्य पर्वत आज दीवार की तरह खडा हो रहा है पापोंका पर्वत। उस पापोंके पर्वत को आरपार भेद कर उसे मर्यादा में स्थापित करनेवाले अगस्त्य शक्ति अपनेपास रखनेवाले, अनिरूद्धरूपी अगस्तीजी का यह व्रत है। तो यह व्रत हमें सभी प्रकार से सुसंपन्न करते हुए गृहस्थी और परमार्थ दोनों ओरसे हमें संपन्नता प्रदान करनेवाला है। अपनी क्षमता को निरंतर बढाते हुए भी संतुलन को कायम रखनेवाला है।

हमें जीवन में अगर इस भवसागर में, या इस संसारमें रहना है तो यहाँ जेलर बनकर रहना है, देखो कैद में जेलर भी होता है और कैदी भी होता है। 'मधुफल वाटिका' में बापूजी ने बहुत सुंदर उदाहरण दिया है, कि इस संसारमें हमें रहना है तो, जेल में कौन रहता है? जेलर भी रहता है और कैदी भी रहता है। हमें जीवन में कैदी बनकर रहना है, प्रारब्ध की कैद में रहना है या प्रारब्ध को कैद में डालकर खुद जेलर बनकर जीना है यह हमारे हाथ में है। तो जेलर बनने के लिए और प्रारब्ध को कैद में डालने के लिए सबसे आसान रास्ता है, अपने प्रारब्धपर मात करने के लिए, हरिकृपा को ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करने के लिए, सामिप्य को प्राप्त करने के लिए, भर्ग लोग को प्राप्त करने के लिये श्रीवर्धमान व्रताधिराज इससे सरल कुछ भी नहीं। इससे आसान कुछ न था, न है, न कभी हो सकता है। यह सर्वोच्च है। इससे ऊपर भी कुछ नहीं, इससे सरल भी कुछ नहीं यही सब कुछ है। क्यों बापू ही सब कुछ है और बापू के हृदय से उत्पन्न हुआ यही सबकुछ है। इसलिए जो भी हमारे लिए जरूरी है वह सब हमें यहाँ से प्राप्त हो सकता है। साल में एक बार करना है देखिए हम पेस्ट कंट्रोल करते है। साल में एकबार करते है तो सालभर कोई problem नहीं आता है। चींटी या कॅाक्रोच कुछ भी नहीं आता है। तो हमारे मन में कोई कॅाक्रोच चीटी घुसे नहीं, जो तरह तरह के किटाणु घुसते रहते हैं। एक बार पेस्ट कंट्रोल करते हैं साल में तो साल भर हम निश्चिंत रहते हैं।

वर्धमान व्रताधिराज साल में एक बार करेंगे तो सालभर कोई चींता ही नहीं है problem ही नहीं। हम हर problem के पीछे दवाई ढूँढने जाएँगे इससे अच्छा है एक बार पेस्ट कंट्रोल कर लो और मुक्ति पाओ। वैसे ही यह वर्धमान व्रताधिराज है। जैसे हमने कहा कि मोबाईल को yearly हम लोग recharge करते हैं, refill करते हैं, तो हमने देखा कि हमारे पास मन रूप handset है। सबके पास हरएक श्रद्धावान के पास बापूने श्रद्धा का simcard हमारे जनम के साथ ही दिया हुआ है free of charge तो एक साल का refill हम लोग इसमें कर रहे हैं। एक बार refil कर लेंगे तो सालभर ultimate talk time और refill करने पर क्या होता है कि आप refill जितने का करते हैं, उसमें से कुछ पैसा कटता है और talk time थोडा ही मिलता है। इसमें infinite और पैसा कुछ नही कितना आसान है और mobile का handset है उसे रोज चार्ज भी तो करना पडता है तो आन्हिक जो बापूने हमें दिया है। देखो बापूने हमें दो चीजें दी है। आन्हिक और श्रीवर्धमान व्रताधिराज । हमारा मोबाईल का हॅण्डसेट हैं उसे चार्ज नहीं करेंगे तो चार्ज नहीं रहेगा तो हम संपर्क कहाँसे करेंगे? तो एक बात हमें जाननी चाहिए कि बापूने हमें चार्जर सौंपा है आन्हिक के रूपमें। इयरली रिफिल करके दिया है।

श्रीवर्धमान व्रताधिराज के रूपमें, हमारे पास श्रद्धा का सिमकार्ड है हमें सिर्फ ॲक्टिव्हेट करना है इस व्रत को फॅालो करेंगे तो अपने आप ॲक्टिव्हेट हो जाएगा और फिर हम कही भी जाएँगे तो भी हम बापूके नेटवर्क में ही रहेंगे। 'मी तुला कधीच टाकणार नाही' । 'मैं कदापि तुम्हारा त्याग नहीं करूँगा'। यह बापूका दिया हुआ अभिवचन याने ऑलव्हेज पूरा का पूरा नेटवर्क चार पाँच लाईन जितनी रहती है पूरा का पूरा एक दो लाईन नहीं पूरा नेटवर्क वह भी फ्री ऑफ चार्ज कुछ भी नहीं। हमेशा मैं तुम्हारे साथ हूँ। हमेशा बापू हमारे समीप हैं। मोबाईल का कैसा है मोबाईल वाला कहीं भी हो तो एक दूसरे से संपर्क कर सकता है हमेशा साथ में रहते है। हम भी उसे कर सकते है वह भी हमसे कर सकता है। ऑलव्हेज गुड सिग्नल और हमेशा सब जगह उनका ही नेटवर्क वहाँ मिलेगा ही मिलेगा नेटवर्क नहीं है ऐसी कोई जगह ही नहीं है और रोमिंग फ्री है। आप साई के रूप में देखो, आप राम के रूप में देखो, आप कृष्ण के रूप में देखो आप कही भी जाओ, जो मूल नेटवर्क जितनी सिस्टम पूरे वल्ड में हो मास्टर ऑफ युनिव्हर्स मेरे बापू ही हैं और एक बार उनके नेटवर्क को चुन लिया तो बस। जन्म जन्मान्तर तक आप उन्हींके हैं। श्रीवर्धमान व्रताधिराज बापूने हमें दिया है। आन्हिक हमें दिया है। हमारे पास चार्जर है, हॅण्डसेट है, सिमकार्ड है, पहले से हमे बापूने दिया है। ईयरली रिफिल भी कर दे रहे है लाईफ टाईम के लिए। तो इतना आसान हमारे लिए हुआ है। भगवानसे संपर्क डायरेक्ट स्थापित करना। किसी भी एजंट की जरूरत नहीं है। डायरेक्ट हम उनसे बात कर सकते हैं, वे हमसे बात कर सकते हैं। यह अनुभव हमें व्रताधिराज में आएगा ही। अब फैसला हमें करना है । मोबाईल दिया है उसे यूज करना है कि नहीं करना है। तो यह हमारा फैसला है। बापू अचिन्तदानी हैं। आप कल्पना भी नहीं कर सकते उस कल्पानासे कई गुना जादा और कहीं अधिक बापू हमें देते ही रहते हैं। हमें बस रिसिव्ह करना है दूसरा कुछ नहीं। तो हम इस व्रताधिराज से यही चाहेंगे कि हम हमेशा उनके नेटवर्क में रहें उनसे बात करते रहे और हमेशा हमारा मोबाईल चार्ज एवं ईयरली रिफिल रहे तो हम कभी भी बात कर सकते हैं।

॥ हरि ॐ ॥

अनिरुद्धाज् बँक ऑफ रामनाम

खातों कि कुल संख्या : ९०,११७	"राम" नाम : ६७८,९३,९२,७८४	"श्री राम जय राम जय जय राम" : ४२,४३,३७,०४९
"कृष्ण" नाम : १६९,७३,४८,१९६	"दत्तगुरु" नाम : ८४,८६,७४,०९८	"जय जय अनिरुध्द हरि" : ४२,४३,३७,०४९

Notice: The information contained in this e-mail message and/or attachments to it may contain confidential or privileged information. If you are not the intended recipient, any dissemination, use, review, distribution, printing or copying of the information contained in this e-mail message and/or attachments to it are strictly prohibited. If you have received this communication in error, please notify us by reply e-mail and immediately and permanently delete the message and any attachments. E-mail transmission cannot be guaranteed to be secure or error-free as information could be intercepted, corrupted, lost, destroyed, arrive late or incomplete, or contain viruses. The sender therefore does not accept liability for any errors or omissions in the contents of this message, which arise as a result of e-mail transmission.
Thank you.